

एस्चुअरीन केकड़े की नई प्रजाति

हाल ही में शोधकर्ताओं ने तमलिनाडु के कूड्डालोर ज़िले में वेल्लार नदी के मुहाने (एक ऐसा क्षेत्र जहाँ नदी समुद्र से मिलती है) के पास परंगीपेट्टई के [मैंग्रोव](#) में एस्चुअरीन केकड़े की एक नई प्रजाति की खोज की है।

- शिक्षा और अनुसंधान में अन्नामलाई विश्वविद्यालय के 100 वर्ष पूरा करने के सम्मान में इस प्रजाति का नाम 'स्यूडोहेलसि अन्नामलाई' रखा गया है।



स्यूडोहेलसि अन्नामलाई:

- **परिचय:**
 - सेंटर ऑफ एडवांस्ड स्टडी (CAS) द्वारा उच्च अंतरज्वारीय क्षेत्रों से प्राप्त किये गए स्यूडोहेलसि प्रजाति का यह पहला रिकॉर्ड है।
 - अब तक इस प्रजाति में केवल दो प्रजातियाँ अर्थात् "स्यूडोहेलसि सबक्वाड्रटा" और "स्यूडोहेलसि लैटरेली" की पुष्टि की गई है।
- **भौगोलिक वितरण:**
 - यह प्रजाति भारतीय उपमहाद्वीप और पूर्वी हृदि महासागर के आसपास पाई जाती है।
- **वैशिष्ट्यता:**
 - स्यूडोहेलसि अन्नामलाई को उसके गहरे बैंगनी और गहरे भूरे रंग से पहचाना जा सकता है, जिसमें अनयिमति हल्के भूरे या सफेद धब्बे होते हैं, जो हल्के भूरे रंग के चेलिपिड के साथ पीछे के कैरापेस पर होते हैं।
 - यह प्रजाति आकार में छोटी है और इसकी अधिकतम चौड़ाई 20 ममी. होती है।
 - अन्य अंतरज्वारीय केकड़ों की तरह यह प्रजाति तेजी से आगे बढ़ सकती है लेकिन आक्रामक नहीं होती है।
- **आवास:**
 - यह प्रजाति मैंग्रोव के कीचड़ भरे किनारों पर रहती है। एवसिनथिया मैंग्रोव के न्यूमेटोफोरस के निकट इनके द्वारा आवास के लिये बनाए बलि पाए गए थे।

◦ प्रवेश के पास बड़े-बड़े छड़ के आकार वाले इन बलियों की गहराई 25-30 से.मी. होती है और उनमें कई शाखाएँ होती हैं।

■ महत्त्व:

- भारत में स्यूडोहेलिस की उपस्थिति पश्चिमी हृदि महासागर और पश्चिमी प्रशांत महासागर के बीच इसके वितरण के अंतराल से संबंधित है।
- नई प्रजातियों की खोज इस बात को साबित करती है कि पूर्वी हृदि महासागर में कुछ समुद्री जीव भौगोलिक रूप से अलग-थलग हैं।

स्रोत: द दृष्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/new-species-of-estuarine-crab-1>

